पुरोवचन

एम0 ए0 (उत्तरार्ध) में चतुर्थ प्रश्न पत्र 'नाटक एवं नाट्यशास्त्र' था। इस प्रश्न पत्र का पाठ्यक्रम मुझे रुचिकर लगा। पाठ्यक्रम में निर्धारित 'रत्नावली' नाटिका, 'दशरूपक', 'अभिनव भारती', 'मृच्छकटिकम्' प्रभृति पुस्तकें मुझे बहुत अच्छी लगीं। इन पुस्तकों का मैंने कई बार पारायण कर डाला। इन पुस्तकों ने मुझमें नाट्यशास्त्र विषयक जिज्ञासा जगाई। फलस्वरूप इन पुस्तकों को आधार बना कर, शोध निर्देशक जी के परामर्शानुसार मैंने **"धनिक कृत 'अवलोक' विशेष सन्दर्भ के साथ 'रत्नावली' नाटिका का समीक्षात्मक अध्ययन"** को अपने शोध का विषय चुना।

धनंजय कृत 'दशरूपक' नाट्यशास्त्र का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में दश मुख्य रूपों या रूपकों का वर्णन है, अतः यह 'दशरूपक' कहलाया। इसका नाम 'दशरूप' ही रहा होगा, क्योंकि धनंजय ने इस ग्रन्थ के अन्तिम श्लोक में इसका नाम 'दशरूप' ही दिया है– **"आविष्कृतं मुंजमहीशगोष्ठी वैदग्ध्यभाजा दशरूपमेतत्"**। धनिक ने भी अपनी टीका का नाम 'दशरूपावलोक' रखा है। किन्तु आज यह ग्रन्थ 'दशरूपक' के नाम से प्रसिद्ध है। भरत मुनि का 'नाट्यशास्त्र' सामान्य जन के लिए दुरूह ही है। नाट्यविद्या को बोधगम्य बनाने के लिए ही धनंजय ने नाट्यशास्त्र के मन्तव्यों को प्रायः 'नाट्यशास्त्र' के शब्दों में ही संक्षेप में ग्रथित किया है–

व्याकीर्णे मन्दबुद्धीनां जायते मतिविभ्रमः।
तस्यार्थस्तत्पदैस्तेन संक्षिप्य क्रियतेऽ०जसा।। 1.5।।

'नाट्यशास्त्र' का आधार लेते हुए भी धनंजय ने यथासंभव नवीन उद्भावनाएँ की हैं, जैसा कि उन्होंने स्वयं ही बतलाया है–

नाट्यानां किन्तु किंचित्प्रगुणरचनाया लक्षणं संक्षिपामि।। 1.4।।

वस्तुतः धनंजय ने पूर्ववर्त्ती आचार्यों के मन्तव्यों का परिष्कार किया है और यथावसर आलोचना भी की है। इस प्रकार अपने अपूर्व गुणों के कारण 'दशरूपक' नाट्यविद्या का उपादेय ग्रन्थ है।

'दशरूपक' पर अनेक टीकाएँ लिखी गईं। कतिपय टीकाकारों के नाम इस प्रकार है—धनिक, नृसिंह भट्ट, देवपाणि, कुरविराम तथा बहुरूप मिश्र। इनमें धनिक की 'अवलोक' नामक टीका प्रसिद्ध एवं प्रकाशित है। धनिक धनंजय के अनुज थे। वे गंभीर विद्वान् तथा कवि थे। अवलोक टीका में पद—पद पर उनकी विद्वत्ता झलकती है। उन्होंने कारिकाओं की व्याख्या के साथ—साथ उदाहरणों द्वारा भी नाटक के नियमों को स्पष्ट किया है। काव्य तथा रूपकों के प्रकरण में आवश्यकतानुसार उद्धरण प्रस्तुत करना एक ओर तो उनके विस्तृत अध्ययन का सूचक है तो दूसरी ओर उनके सूक्ष्म निरीक्षण एवं मनन को प्रकट करता है।

'दशरूपक' की वृत्ति होते हुए भी 'दशरूपावलोक' का अपना निजी महत्त्व है। इसमें अनेक विवादास्पद विषयों का विस्तृत विवेचन किया गया है; जैसे— नाटक में शान्त रस की योजना, रसों का विरोध तथा अवरोध, काव्य का रसभाव आदि के साथ सम्बन्ध। उन्होंने इस टीका में अनेक उद्धरण भी दिए हैं, जैसे 'रत्नावली', 'मृच्छकटिकम्' आदि के इन उद्धरणों के विषय में धनिक की विशेषता यह है कि उन्होंने अधिकांश स्थलों पर ग्रन्थ या कवि के नाम का भी उल्लेख किया है। इसमें संदेह नहीं है कि यह कृत्ति 'दशरूपक' किंवा संस्कृत नाट्यशास्त्र को अवलोकित करती है।

'रत्नावली' महाराजा हर्ष की यशस्विनी कृति है। वे अतीत भारत के एक ऐसे यशस्विनी सम्राट् हैं, जिनकी देश तथा काल सम्बन्धी सीमा देश के राजनीतिक इतिहास के पत्रों पर स्वर्णाक्षरों से अंकित है। वीरता तथा लक्ष्मी के साथ ही वे सरस्वती के भी कृपापात्र थे। उनके नाम से तीन

रचनाएँ प्रसिद्ध हैं– (1) प्रियदर्शिका, (2) रत्नावली, (3) नागानन्द। 'रत्नावली' नाटिका की समीक्षा ही मेरे शोध का प्रतिपाद्य है। धनिक में 'अवलोक' में अपने मन्तव्य के स्पष्टीकरण के लिए 'रत्नावली' नाटिका से 70 उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। मैंने इस शोध – प्रबन्ध में विविध प्रकरणों में 'रत्नावली' नाटिका की, धनिक के 'अवलोक' के संदर्भ में समीक्षा की है।

प्रस्तुत शोध – प्रबन्ध सात अध्यायों में विभक्त है। 'नाट्य विषय' प्रथम अध्याय का शीर्षक है। नाट्यशास्त्र में तीन शब्द बहु–प्रयुक्त होते हैं– नाट्य, नाटक तथा रूपक। इन शब्द –त्रय की व्युत्पत्ति, अर्थ एवं लक्षण पर सबसे पहले विचार किया गया है। फिर भरत मुनि एवं उनके नाट्यशास्त्र की चर्चा है। तदुपरान्त धनंजय, धनिक, 'दशरूपक' तथा 'अवलोक' एवं रूपकों के भेद का निरूपण हुआ है।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है– **"रत्नावली नाटिका : रचयिता, नाटिका के लक्षण एवं विवेच्य नाटिका में समन्वय"**। इस अध्याय में 'रत्नावली' नाटिका के रचयिता हर्षदेव के जीवन – वृत्त एवं कृतित्व पर विचार कियां गया है। फिर नाटिका के लक्षणों के आधार पर 'रत्नावली' की परीक्षा की गई है।

"कथावस्तु का विवेचन एवं 'रत्नावली' नाटिका की समीक्षा" – तृतीय का शीर्षक है। नाम के अनुरूप यह अध्याय अत्यन्त विशद है। स्थूल रूप से इस अध्याय के शीर्षक के अनुसार दो भाग हैं– (1) कथावस्तु का विवेचन, (2) 'रत्नावली' नाटिका की समीक्षा। 'कथावस्तु का विवेचन' के अन्तर्गत कथावस्तु के भेद, कार्य की पाँच अवस्थाएँ, पंच संधियाँ, सूच्य वस्तु, नाटय धर्म की दृष्टि से भेद का 'रत्नावली' नाटिका के सन्दर्भ में विवेचन हुआ है। फिर 'रत्नावली' नाटिका की संक्षिप्त कथावस्तु देते हुए उसकी समीक्षा प्रस्तुत की गई है। तदुपरान्त 'संस्कृत साहित्य' में 'रत्नावली' का स्थान निर्धारित किया गया है।

प्रत्येक नाटक या नाटिका में पात्र होते हैं। अतः चतुर्थ अध्याय का शीर्षक दिया गया– पात्र विवेचन । इस अध्याय में नाटिका के नायक का लक्षण एवं 'रत्नावली' नाटिका में उसका समन्वय; नाटिका में नायिका का स्वरूप – विवेचन तथा 'रत्नावली' नाटिका में उसका स्थान; नाटिका की नायिका : रत्नावली; अन्य पुरुष तथा अन्य स्त्री पात्रों पर विचार – विमर्श प्रस्तुत किया गया है।

'रस विवेचन' पंचम अध्याय का शीर्षक है। इस अध्याय में सर्वप्रथम 'रस' शब्द की मीमांसा की गई है। फिर रसों के अंगों पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं। तदुपरान्त श्रृंगार रस के स्वरूप पर विचार करते हुए, 'रत्नावली' नाटिका में उसकी स्थिति का आकलन किया गया है।

षष्ठ अध्याय का शीर्षक है–'नाटय वृत्तियों तथा प्रवृत्तियों का विवेचन'। इस अध्याय में 'रत्नावली' के सन्दर्भ में नाट्य वृत्तियों तथा प्रवृत्तियों की विस्तृत समीक्षा की गई है।

अभी तक जो कुछ भी विवेचित हुआ, उसका सम्बन्ध नाट्य – रचना से था। जब नाटक खेला जाता है तो उसका संबंध नाट्य प्रयोग से होता है। अतएव सप्तम अध्याय में 'नाट्य–प्रयोग : नाटक के आवश्यक अंगों का विवेचन' विषय पर विचार किया गया है। इस अध्याय में मुख्य रूप से पूर्व रंग, भारती वृत्ति, प्रहसन तथा प्ररोचना का 'रत्नावली' के सन्दर्भ में विवेचन किया गया है।

मेरा पुनीत कर्त्तव्य है कि इस शोध–कार्य में जिन महानुभावों ने किसी भी प्रकार की सहायता पहुँचाई हो उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करूँ। सर्वप्रथम मैं अपने शोध निर्देशक विद्वद्वर डॉ0 अरविन्द मिश्र जी की विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने शोध–निर्देशन का गुरुतर दायित्व स्वीकार कर मुझे अपना कृपाभाजन बनाया तथा अपने व्यस्ततम कार्यक्रम में से अपना अमूल्य समय देकर इस कार्य को आद्यन्त सम्पन्न कराया।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध इन्हीं के विद्वत्तापूर्ण शोध–निर्देशन तथा आशीर्वाद का प्रतिफल है।

माता–पिता (श्रीमती देवान्ती सिंह तथा (श्री) श्रीराम सिंह) के द्वारा समय–समय पर दिए गए उत्साहवर्धक वचन संजीवनी – सा कार्य करते रहे। शाब्दिक रूप में उनके प्रति किसी प्रकार का आभार – प्रदर्शन धृष्टता होगी।

विद्वद्वर डॉ0 बैजनाथ पाण्डेय की मैं विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ। उनका वरद हस्त सदैव मेरे ऊपर रहा। वे मुझे सदैव प्रोत्साहित करते रहे।

मैं गुरु–तुल्य परम आदरणीय डॉ0 मनहर गोपाल भार्गव की विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने काव्यशास्त्र विषयक अनेक पुस्तकें तथा परामर्श देकर मेरे कार्य को सुगम बनाया।

अपने भाई अमित तथा बहन प्रीति के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जिनके स्नेह एवं सहयोग से मेरा कार्य सहज हो सका। इन सबके साथ मैं अपने पति एवं अभिन्न हृदय विवेक सिंह की अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने कभी मित्र के समान तो कभी पति के रूप में मुझे काम पूरा करने की प्रेरणा दी।

शोध प्रबन्ध के सम्पूर्ण संयोजन में 'सहज कम्प्यूटर्स' के आशीष चन्द्र वर्मा एवं टंकण में श्रीमती मंजू भार्गव, मुनीश चन्द्र वर्मा एवं अक्षय वर्मा ने अत्यन्त परिश्रम किया, उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

– मधुलिका सिंह

प्रथम अध्याय